चित्रःगूगल से साभार

क्या मौसम है

आँख तो नम है ग़ज़ल हुई
क्या मौसम है ग़ज़ल हुई
उसने मेरा नाम लिया
ये क्या कम है ग़ज़ल हुई
वो ये बोला ज़ख्मों का
तू मरहम है ग़ज़ल हुई
जानें कितनी यादों का
तू अलबम है ग़ज़ल हुई
लब पर तो हैं मुस्कानें
भीतर ग़म है ग़ज़ल हुई
मैं बस उसको ही गाऊँ
एक सरगम है ग़ज़ल हुई

वंदना कुँअर रायज़ादा